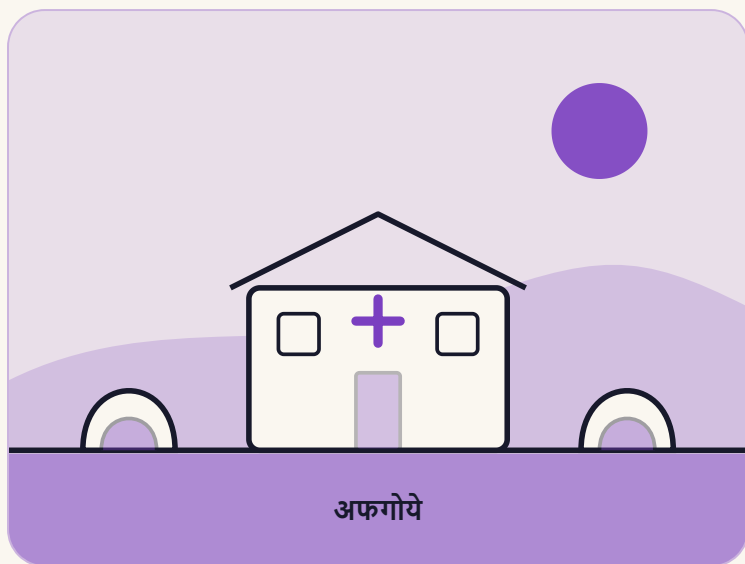




सोमालिया

90,000 अजनबियों को पनाह देने वाली डॉक्टर

जब सोमालिया युद्ध में झूलस रहा था, तब एक डॉक्टर ने अपने फ़ार्म को सुरक्षा का शहर बना दिया। उन्होंने कभी किसी को वापस नहीं लौटाया।

कहाँ अफगोये कॉरिडोर, लोअर शबेले

कौन डॉ. हावा अब्दी, एक डॉक्टर और वकील, और उनकी बेटियाँ

कब 1983 से 2020

4 मिनट में पढ़ें

कहानी

हावा अब्दी का जन्म सोमालिया के मोगादिशु में हुआ था। जब उनकी माँ का निधन हुआ, तब वे बारह साल की थीं। उनकी माँ की मौत प्रसव के दौरान हुई थी। इस दुख ने उनका दिल तोड़ दिया, लेकिन उन्हें एक मक़सद भी दिया। उन्होंने डॉक्टर बनने की ठान ली। वे दूसरी माताओं को ज़िंदा रखना चाहती थीं।

उनके पिता मोगादिशु के बंदरगाह पर काम करते थे। उन्होंने उनके सपने का साथ दिया। 1964 में उन्हें कीव में डॉक्टरी पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति मिली। उन्होंने कड़ी मेहनत की और 1971 में डिग्री हासिल की। वे सोमालिया की पहली महिला स्त्री रोग विशेषज्ञों में से एक बनीं। बाद में उन्होंने रात में पढ़कर वकालत की डिग्री भी ली।

धूल में खुला एक छोटा अस्पताल

1983 में डॉ. अब्दी ने एक छोटा ग्रामीण क्लिनिक खोला। उन्होंने इसे अफगोये के पास अपने परिवार की पुश्तैनी ज़मीन पर बनाया। यह फ़ार्म मोगादिशु से लगभग तीस किलोमीटर बाहर था। शुरुआत में क्लिनिक में सिर्फ़ एक कमरा था। वे हर दिन लगभग चौबीस महिलाओं का इलाज करती थीं। उनमें से ज़्यादातर ग़रीब किसान थीं जिन्होंने कभी डॉक्टर नहीं देखा था।

अगर किसी मरीज़ के पास पैसे नहीं होते, तो डॉ. अब्दी कुछ नहीं लेती थीं। वे दवाइयाँ देती थीं और सुरक्षित प्रसव कराती थीं। आठ साल तक उन्होंने यह शांत सेवा चलाई। उन्होंने फ़ार्म पर फलदार पेड़ लगाए और मक्का उगाया। ज़िंदगी शांत और सहज चल रही थी।

जब युद्ध आया

1991 में सोमालिया की सरकार गिर गई। एक भयानक गृहयुद्ध ने देश को तबाह कर दिया। मोगादिशु की सड़कों पर बंदूकें ही बंदूकें थीं। हथियारबंद गिरोह घरों पर हमले कर रहे थे, और पड़ोसी पड़ोसियों के खिलाफ़ हो गए थे। कई पढ़े-लिखे डॉक्टर और शिक्षक देश छोड़कर भाग गए। डॉ. अब्दी भी देश छोड़कर जा सकती थीं। उनके पास डॉक्टरी की डिग्रियाँ थीं और यूरोप में दोस्त थे।

उनकी नानी ने उनसे रुकने को कहा। उन्होंने हावा से कहा कि गरीब परिवारों के पास भागने की कोई जगह नहीं है। डॉ. अब्दी ने अपने फ़ार्म पर ही रुकने का फैसला किया। जल्द ही डरे-सहमे परिवार मोगादिशु की सड़क से पैदल आने लगे। वे सिर पर छोटी-छोटी पोटलियाँ उठाए हुए थे। वे अपने घर खो चुके थे। डॉ. अब्दी ने अपने दरवाज़े खोल दिए और उनका स्वागत किया।

1992 में सोमालिया में भयानक अकाल पड़ा। खाना ख़त्म हो गया और लोग भूखों मरने लगे। डॉ. अब्दी ने किसी को भी वापस लौटाने से इनकार कर दिया। उन्होंने अनाज ख़रीदने के लिए अपने परिवार के सोने के गहने बेच दिए। उन्होंने भूखे बच्चों को खिलाने के लिए मक्का और दूध ख़रीदा।

हर सुबह वे मृतकों को दफ़नाने में मदद करती थीं। कुछ दिन वे पचास लोगों को दफ़नाते थे। फिर भी वे ज़िंदों का इलाज करती रहीं। उन्होंने हर परिवार को तंबू लगाने के लिए मुफ़्त ज़मीन दी। उन्होंने साफ़ पानी के लिए कुएँ खुदवाए। महिलाओं ने लकड़ियों और कपड़ों से गुंबद जैसे घर बनाए। वह फ़ार्म एक भरा-पूरा शरण स्थल बन गया।

मैं एक औरत हूँ, हाँ। लेकिन मैं एक डॉक्टर हूँ। आपने समाज के लिए क्या किया है?

हथियारबंद लड़ाकों से डॉ. हावा अब्दी, 2010

शांति के दो नियम

2000 के दशक के अंत तक, फ़ार्म पर लगभग नब्बे हज़ार लोग रहने लगे थे। यह एक छोटे शहर में बदल चुका था। यहाँ रहने वालों में ज़्यादातर महिलाएँ और बच्चे थे। डॉ. अब्दी ने वहाँ आने वाले हर व्यक्ति के लिए दो कड़े नियम बनाए।

पहला, कोई भी इंसान लोगों को क़बीलों में नहीं बाँट सकता था। सोमालिया में क़बीलाई दुश्मनी ही ज़्यादातर युद्ध की वजह थी। डॉ. अब्दी ने क़बीलों की बातचीत पर पूरी तरह पाबंदी लगा दी। उनके कैंप में हर कोई सिर्फ़ सोमाली था। अगर किसी ने क़बीलाई झगड़ा शुरू किया, तो गार्ड उसे बाहर निकाल देते थे।

दूसरा, कोई भी पुरुष अपनी पत्नी को नहीं पीट सकता था। डॉ. अब्दी ने एक छोटे गोदाम को जेल में बदल दिया। अगर कोई पुरुष किसी महिला पर हाथ उठाता, तो गार्ड उसे गोदाम में बंद कर देते थे। वह तब तक वहीं रहता जब तक गाँव के बुजुर्ग मामला सुलझा न लें। सरगनाओं के राज वाले देश में, महिलाओं को उनके दरवाज़ों के पीछे सुकून मिला।

90,000

शिखर पर शरण
पाए लोग

400

उनके अस्पताल में
बिस्तर

850

कैंप के स्कूल में
बच्चे

37

सेवा के साल

बंदूकों के सामने निडर

वह क्लिनिक चार सौ बिस्तरों वाले अस्पताल में बदल गया। डॉ. अब्दी की दो बेटियों, देक्रो और अमीना, ने विदेश में डॉक्टरी की पढ़ाई की। दोनों बेटियाँ अपनी माँ के साथ काम करने वापस लौटीं। मिलकर उन्होंने सर्जरी की और स्थानीय नर्सों को प्रशिक्षित किया। उन्होंने आठ सौ पचास बच्चों के लिए एक प्राइमरी स्कूल खोला। ज़्यादातर विद्यार्थी छोटी बच्चियाँ थीं।

मई 2010 में सैकड़ों भारी हथियारों से लैस लड़ाकों ने कैंप पर हमला किया। वे एक चरमपंथी गुट के थे। लड़ाकों ने ट्रकों और मशीनगनों से अस्पताल को घेर लिया। उन्होंने डॉ. अब्दी को चाबियाँ सौंपने का हुक्म दिया। उनका कहना था कि एक बुजुर्ग औरत को अस्पताल चलाने का कोई हक नहीं है।

डॉ. अब्दी ज़रा भी नहीं डिगीं। उनके पास बंदूकें नहीं थीं, लेकिन उन्होंने युवा कमांडर की आँखों में देखा। उन्होंने उससे कहा कि वे दशकों से सोमालिया की सेवा कर रही हैं। फिर उन्होंने पूछा कि उसने अपने लोगों के लिए कभी क्या किया है।

लड़ाकों ने क्लिनिक में तोड़फोड़ की और उन्हें घर में नज़रबंद कर दिया। लेकिन डॉ. अब्दी ने चुपके से एक फ़ोन हासिल कर लिया। उन्होंने दुनिया भर के पत्रकारों, राहत एजेंसियों और साथियों को फ़ोन किया। इस बीच कैंप की सैकड़ों महिलाओं ने विरोध प्रदर्शन किया। उन्होंने बंदूकधारियों को घेर लिया और उनकी रिहाई की माँग की।

गुस्साई माताओं से घिरे लड़ाके शर्मिदा हो गए। वे पीछे हट गए और कैप से चले गए। यहाँ तक कि जाने से पहले मिलिशिया कमांडर ने डॉ. अब्दी को औपचारिक माफ़ीनामा लिखकर दिया।

डॉ. हावा अब्दी ने सैंतीस साल बेघर हुए परिवारों की सेवा में बिताए। अगस्त 2020 में तिहत्तर साल की उम्र में मोगादिशु में उनका निधन हो गया। उनकी बेटियाँ आज भी उनके मिशन को आगे बढ़ा रही हैं। धूल भरी ज़मीन के एक टुकड़े पर, एक महिला ने साबित कर दिया कि करुणा युद्ध से कहीं अधिक ताक़तवर है।

कब क्या हुआ

- **1983** डॉ. हावा अब्दी अपने पारिवारिक फ़ार्म पर एक कमरे का क्लिनिक खोलती हैं।
- **1991** गृहयुद्ध शुरू होता है, और बेघर हुए परिवार उनकी ज़मीन पर शरण लेते हैं।
- **1992** अकाल पड़ता है, और वे खाना ख़रीदने के लिए पारिवारिक गहने बेचती हैं।
- **2010** हथियारबंद लड़ाके अस्पताल पर हमला करते हैं, लेकिन वे जाने से इनकार कर देती हैं।
- **2012** उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामांकित किया जाता है।
- **2020** 73 साल की उम्र में डॉ. अब्दी का निधन होता है, और उनकी बेटियाँ फ़ाउंडेशन संभालती हैं।

दूसरा अध्याय

यह कहानी ख़ास क्यों है

ज़्यादातर राहत कैप विदेशी सहायता एजेंसियों या सेनाओं द्वारा चलाए जाते हैं। यह कैप एक अकेली सोमाली महिला डॉक्टर और उनकी बेटियों द्वारा बनाया और बचाया गया था।

दशकों तक उन्होंने नब्बे हज़ार लोगों को युद्ध के सरगनाओं, अकाल और क़बीलाई नफ़रत से सुरक्षित रखा।

हमारी राय

साहस हमेशा हथियार नहीं थामता। कभी-कभी यह क्लिनिक का दरवाज़ा खुला रखता है और हटने से इनकार कर देता है।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1

जो आपके पास है, जहाँ आप हैं, वहीं से शुरू करें

डॉ. अब्दी ने अस्पताल की इमारत का इंतज़ार नहीं किया। उन्होंने अपने फ़ार्म पर एक कमरे से शुरुआत की।

यह आज़माएँ: अपना कोई एक हुनर चुनें। इस हफ़्ते किसी पड़ोसी की मदद के लिए उसका इस्तेमाल करें।

2

शुरुआत में ही साफ़ नियम तय करें

उन्होंने क़बीलाई बँटवारे और घरेलू हिंसा पर रोक लगाकर नब्बे हज़ार लोगों को शांति से रखा।

यह आज़माएँ: अपने परिवार या टीम के लिए सम्मान के दो आसान नियम लिखें।

3

जब धौंस जमाने वाले आपका काम छीनना चाहें, तो डटे रहें

सैकड़ों लड़ाकों के सामने निहत्थे होकर, उन्होंने कमांडर की आँखों में देखा और झुकने से इनकार कर दिया।

यह आज़माएँ: इस हफ़्ते किसी अनुचित माँग पर शांति और शालीनता से 'ना' कहने का अभ्यास करें।

4

मशाल आगे बढ़ाने के लिए अगली पीढ़ी को तैयार करें

उनकी दोनों बेटियों ने डॉक्टरी पढ़ी और उनके साथ अस्पताल संभालने वापस लौटीं।

यह आजमाएँ: अपने जीवन के किसी युवा को एक ऐसा व्यावहारिक हुनर सिखाएँ जिसका आप रोज़ इस्तेमाल करते हैं।

साथ ले जाने वाली एक बात

साहस हमेशा हथियार नहीं थामता। कभी-कभी यह
क्लिनिक का दरवाज़ा खुला रखता है।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

The Guardian

[The doctor undaunted by Somalia's insurgents](#)

Face2Face Africa

[The heroic Hawa Abdi, one of Somalia's first female obstetricians who saved thousands during the civil war](#)

TED

[Mother and daughter doctor-heroines](#)

Dr. Hawa Abdi Foundation

[Keeping Hope Alive](#)

तथ्य-जाँच नोट: कैप की आबादी 2010 से 2011 के अपने चरम पर लगभग 90,000 बताई गई है, हालाँकि सूखे और संघर्ष के साथ संख्या बदलती रही। स्रोतों के अनुसार मई 2010 के हमले में लड़ाकों की संख्या कई सौ से लेकर 750 के बीच थी। उनकी दोनों बेटियाँ डॉक्टर हैं: देक्रो मोहम्मद (जिन्हें देक्रो अदन भी कहा जाता है) और अमीना मोहम्मद। “हमारी राय” वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।